उत्साह तथा अट नहीं रही है

–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

काव्यांश

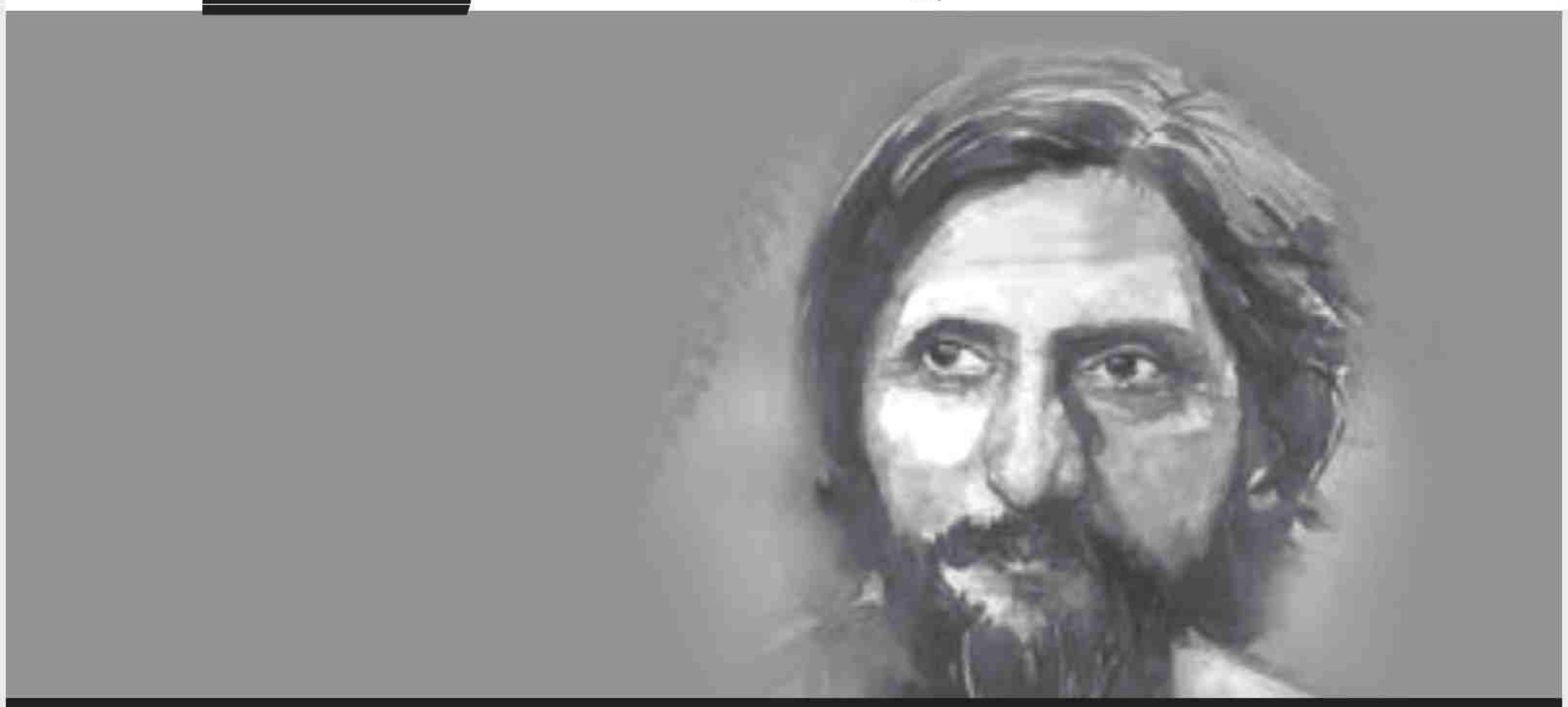

'उत्साह'—यह एक आह्वान गीत है। इसमें कवि ने बादलों को संबोधित करते हुए संसार में नवीन चेतना जगाने का आह्वान किया है।

'अट नहीं रही है'—इस कविता में फागुन माह के सौंदर्य का वर्णन किया गया है। कवि फागुन मास की शोभा से इतना अभिभूत है कि वह उससे नज़रें नहीं हटा पा रहा है।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 एवं 2 अंक]

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. **'उत्साह' कविता के कवि हैं—** **[Diksha]**

(i) जयशंकर प्रसाद

(ii) देवदत्त

(iii) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(iv) नागार्जुन

उत्तर : *(iii) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'*

व्याख्यात्मक हल : 'बादल' कवि निराला का प्रिय विषय रहा है अत: इस कविता के कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' हैं।

2. **"कवि बादल से बरसने के स्थान पर गरजने को क्यों कहता है?"** **[Diksha]**

(i) लोगों को डराने के लिए

(ii) परिवर्तन लाने के लिए

(iii) बारिश का संकेत देने के लिए

(iv) राहत देने के लिए

3. **'उत्साह' कविता किस शैली में रची गई है?**

(i) संबोधन शैली **(ii)** चित्रात्मक शैली

(iii) कथात्मक शैली **(iv)** मुहावरेदार शैली

उत्तर : *(i) संबोधन शैली*

व्याख्यात्मक हल : 'उत्साह' कविता में बादलों को संबोधित करके उनका आह्वान किया गया है अत: यह कविता संबोधन शैली में रची गई है।

4. 'कहीं साँस लेते हो' में कौन-सा अलंकार है?

(i) उपमा अलंकार **(ii) रूपक अलंकार**

(iii) श्लेष अलंकार **(iv) मानवीकरण अलंकार**

उत्तर : *(iv) मानवीकरण अलंकार*

व्याख्यात्मक हल : उपर्युक्त पंक्ति में मानवीकरण अलंकार है क्योंकि यहाँ फागुन को मानव के समान साँस लेते हुए दिखाया गया है।

5. 'घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ'—इस पंक्ति में कौनसा अलंकार है?

(i) उपमा **(ii) रूपक**

(iii) अनुप्रास **(iv) श्लेष**

उत्तर : (iii) अनुप्रास

व्याख्यात्मक हल : 'घ' वर्ण की आवृत्ति के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।

6. कवि बादल से क्या प्रार्थना कर रहा है?

(i) गरजने की **(ii) बरसने की**

(iii) चले जाने की **(iv) बिजली चमकाने की**

उत्तर : (i) गरजने की

व्याख्यात्मक हल : कवि चाहता है कि बादल जोर से गरजे क्योंकि उनकी गर्जना से समाज में क्रांति और परिवर्तन लाया जा सकता है।

काव्यांश पर आधारित प्रश्न

[बहुविकल्पीय / अतिलघु / लघु प्रश्न]

7. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 2 + 2 + 1

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ !
ललित ललित, काले घुंघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले !
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो
बादल गरजो !

[CBSE 2011]

(क) कवि बादल को क्या घेरने के लिए कह रहा है और क्यों?

(ख) कवि ने बादलों को किस रूप में प्रस्तुत किया है और क्यों?

(ग) 'बाल कल्पना के—से पाले' में कौन-सा अलंकार है?

उत्तर : (क) कवि बादल से सम्पूर्ण आकाश को घेरने के लिए कह रहा है। ऐसा उसने इसलिए कहा है क्योंकि वह चाहता है कि बादल सारी धरती पर जल बरसाकर धरती को शीतलता का अहसास कराए।

(ख) कवि ने बादलों को क्रांति और नवचेतना उत्पन्न करने वालों के रूप में प्रस्तुत किया है क्योंकि वे मानव मन को उद्वेलित करने में सक्षम हैं।

(ग) 'बाल कल्पना के-से पाले' में उपमा अलंकार है क्योंकि यहाँ बादलों की रचना और बालक की कल्पनाओं में समानता व्यक्त की जा रही है।

8. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 2 + 2+ 2

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी, कहीं लाल,
कहीं पड़ी है उर में
मंद गंध पुष्प माल,
पाट-पाट शोभा श्री
पट नहीं रही है।

[CBSE 2016, 14]

(क) कविता में कौन-सी ऋतु का वर्णन है और कवि अपनी आँख क्यों नहीं हटा पा रहा है?

(ख) 'कही पड़ी में उर में, मंद गंध पुष्प माल'—पंक्ति का भाव सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(ग) हरे और लाल पत्तों से लदी डालियों को देखकर कैसा लगता है?

उत्तर : (क) कविता में वसंत ऋतु का वर्णन है। फागुन में प्रकृति की शोभा इतनी बढ़ गई है कि वह प्रकृति के प्रत्येक कण में से बाहर निकल रही है इसलिए कवि अपनी आँख नहीं हटा पा रहा है।

(ख) प्रस्तुत पंक्ति में कवि कहता है कि फागुन की सुन्दरता देखकर ऐसा लगता है कि फागुन रूपी मानव के हृदय पर मंद गंध से मदमस्त करने वाली पुष्पों की माला पड़ी हुई है।

(ग) हरे और लाल पत्तों से लदी हुई डालियों को देखकर ऐसा लगता है कि मानो फागुन रूपी मनुष्य के गले में सुगंधित पुष्पों की माला पड़ी हुई है। प्रत्येक स्थान पर फागुन का सौंदर्य फैला हुआ है।

9. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए— 1 × 5

अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो,
घर-घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम
पर-पर कर देते हो,
आँख हटाता हूँ तो
हट नहीं रही है।

(क) किसकी आभा हट नहीं रही है?
(i) उड़ने वाले पक्षियों की
(ii) फागुन की
(iii) घर की
(iv) नायिका की

(ख) कवि ने किसकी सुन्दरता का वर्णन किया है?
(i) बादलों की (ii) नायिका की
(iii) नदियों की (iv) फागुन की

(ग) 'घर घर और पर पर' में कौनसा अलंकार है?
(i) मानवीकरण (ii) श्लेष
(iii) यमक (iv) पुनरुक्तिप्रकाश

(घ) आकाश में पंख फैलाकर कौन उड़ना चाहता है?
(i) चिड़िया
(ii) कवि का पक्षी रूपी मन
(iii) बादल
(iv) पेड़ों के पत्ते

(ङ) 'कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो' पंक्ति का क्या अर्थ है?
(i) बादलों का साँस लेना
(ii) कवि फागुन की हरियाली को महसूस करता है
(iii) पेड़ों पर नए पत्ते आए हैं
(iv) फागुन की साँस का सुगन्धित झोंका वातावरण को सुगन्धित करता है

उत्तर : (क) *(ii) फागुन की*

व्याख्यात्मक हल : काव्यांश के अनुसार फागुन की शोभा बहुत व्यापक है इसलिए वह हट नहीं रही है।

(ख) *(iv) फागुन की*

व्याख्यात्मक हल : कवि ने फागुन की सुन्दरता का वर्णन किया है क्योंकि वह सब तरफ फैली हुई है।

(ग) *(iv) पुनरुक्तिप्रकाश*

व्याख्यात्मक हल : यहाँ 'घर-घर' और 'पर-पर' का प्रयोग एक ही अर्थ में दो बार हुआ है इसलिए यहाँ पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है।

(घ) *(ii) कवि का पक्षी रूपी मन।*

व्याख्यात्मक हल : कवि हर तरफ हरियाली देखकर इतना प्रसन्न है कि उसका पक्षी रूपी मन उड़ जाना चाहता है।

(ङ) *(iv) फागुन की साँस का सुगन्धित झोंका वातावरण को सुगन्धित करता है।*

व्याख्यात्मक हल : फागुन का साँस लेने का अर्थ है हवाओं के चलने से फूलों की सुगंध का चहुँ ओर फैलना और वातावरण को सुगन्धित बनाना।

10. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए— 1 × 5

बादल, गरजो!
घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ !
ललित ललित, काले घुंघराले,
बाल कल्पना के-से पाले,
विद्युत-छबि उर में, कवि, नवजीवन वाले !
वज्र छिपा, नूतन कविता
फिर भर दो
बादल गरजो !

(क) बादल को किसके समान बताया गया है?
(i) काले घुँघराले बालों के समान
(ii) प्रेम के समान
(iii) बिजली के समान
(iv) रुई के समान

(ख) यह कविता किस युग की है?
(i) भक्ति युग की
(ii) आधुनिक युग की
(iii) छायावादी युग की
(iv) प्रगतिशील युग की

(ग) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का उदाहरण है?
(i) ललित ललित, घेर घेर
(ii) बादल गरजो
(iii) काले घुँघराले
(iv) विद्युत छवि

(घ) नूतन कविता कैसी होनी चाहिए?
(i) प्रेम से युक्त
(ii) बादल की गर्जना से युक्त

(iii) नवजीवन का संचार करने वाली

(iv) समस्या सुलझाने वाली

(ङ) इस कविता में कवि किसका आह्वान कर रहा है?

(i) बच्चों का **(ii) बादलों का**

(iii) पहाड़ों का **(iv) विद्युत का**

उत्तर : (क) *(i) काले घुँघराले बालों के समान*

व्याख्यात्मक हल : कविता में बादल को काले घुँघराले बालों के समान बताया गया है क्योंकि बादलों का कोई आकार नहीं होता और वे काले होते हैं।

(ख) *(iii) छायावादी युग की*

व्याख्यात्मक हल : सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' छायावादी युग के प्रमुख आधार स्तम्भ रहे हैं। अत: यह कविता छायावादी युग की है।

(ग) *(i) ललित ललित, घेर घेर*

व्याख्यात्मक हल : पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार में एक शब्द की आवृत्ति समान अर्थ में ही होती है। अत: उपर्युक्त विकल्प सही है।

(घ) *(iii) नवजीवन का संचार करने वाली*

व्याख्यात्मक हल : नूतन कविता नवजीवन का संचार करने वाली होनी चाहिए जिससे समाज में बदलाव आ सके।

(ङ) *(ii) बादलों का*

व्याख्यात्मक हल : इस कविता में कवि बादलों का आह्वान कर रहा है क्योंकि बादल ही नवचेतना का संचार कर सकते हैं।

11. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए— 1 × 5

बादल गरजो !

विकल विकल, उन्मन थे उन्मन

विश्व के निदाघ के सकल जन,

आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन !

तप्त धरा, जल से फिर

शीतल कर दो

बादल, गरजो

(क) काव्यांश के अनुसार धरती पर मनुष्यों की दशा कैसी थी?

(i) मनुष्य व्याकुल और अनमने थे

(ii) मनुष्य प्रसन्न थे

(iii) मनुष्य हर्षित थे

(iv) मनुष्य संघर्षशील थे

(ख) बादलों को 'अनंत के घन' कहा गया है, क्योंकि—

(i) वे अनंत ईश्वर की कृति हैं

(ii) वे घन हैं

(iii) वे क्रांतिकारी हैं

(iv) वे वर्षा करते हैं

(ग) बादल किस दिशा से आए हैं?

(i) उत्तर दिशा से **(ii) पूर्व दिशा से**

(iii) दक्षिण दिशा से **(iv) अज्ञात दिशा से**

(घ) कवि बादलों से क्या चाहता है?

(i) धरा को शीतल करना

(ii) गरजना

(iii) आकाश में छाना

(iv) अज्ञात दिशा से आना

(ङ) काव्यांश में 'निदाघ' किसका प्रतीक है?

(i) गरमी का

(ii) सरदी का

(iii) वर्षा का

(iv) कष्टों और दुखों का

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (30-40 शब्द)

12. फागुन की आभा कैसी है और 'अट नहीं रही है' में उसकी स्थिति कैसी वर्णित हुई है? [CBSE 2016]

उत्तर : फागुन की आभा सर्वव्यापक है और सृष्टि के कण-कण में समायी हुई है। चारों ओर सुगन्धित वातावरण व्याप्त है। फागुन की आभा और उसकी सर्वव्यापकता के दर्शन पेड़, पत्तों और फूलों आदि में होते हैं। कविता में फागुन के सौंदर्य को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि फागुन का सौंदर्य चारों ओर झलकता है और वातावरण को सुगन्धित कर देता है।

13. 'उत्साह' कविता में कौन विकल और उन्मन थे और क्यों? [CBSE 2012]

उत्तर : 'उत्साह' कविता में संसार के सभी मनुष्य विकल और उन्मन थे क्योंकि गरमी निरंतर बढ़ती जा रही थी और

बादलों के न बरसने के कारण लोगों में बैचैनी और व्याकुलता भी बढ़ती जा रही थी। भयानक गरमी के कारण धरती भी जलती हुई सी प्रतीत हो रही थी।

14. 'उत्साह' कविता में सुंदर कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों हैं, कैसे? [CBSE 2019]

उत्तर : 'उत्साह' कविता में कवि ने बादलों को सुंदर कल्पना और क्रांति-चेतना का प्रतीक माना है क्योंकि बादल नित नवीन काल्पनिक आकार लेते हैं। वे अपनी गर्जना से सम्पूर्ण धरा पर परिवर्तन की लहर ला देते हैं। उनसे प्रेरणा लेकर दुखी और निराश व्यक्ति के मन में भी नवीन आशा का संचार हो जाता है।

15. 'उत्साह' कविता में बादल के माध्यम से कवि निराला के जीवन की झलक मिलती है। इस कथन से आप कितने सहमत हैं? [CBSE 2016]

उत्तर : 'उत्साह' कविता में बादलों के माध्यम से कवि निराला के जीवन की झलक मिलती है। यह कथन अक्षरश: सत्य है क्योंकि विपरीत परिस्थितियों में भी निराला हमेशा वज्र के समान कठोर बने रहे। उन्हें मजदूरों, निर्बलों के प्रति सहानुभूति थी।

16. "आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन !" पंक्ति का भाव 'उत्साह' कविता के आधार पर समझाकर लिखिए। [CBSE 2015]

उत्तर : इस पंक्ति में कवि ने आकाश में बादलों के छाने की स्थिति का वर्णन किया है। बादल अचानक किसी भी दिशा से आकर आसमान में छा जाते हैं। अज्ञात दिशा से यकायक आकर आकाश को ढक लेते हैं।

17. फागुन मास की शोभा का वर्णन कीजिए। [CBSE 2013]

उत्तर : कविता में कवि ने फागुन मास की शोभा का वर्णन करते हुए बताया है कि उसमें प्रकृति की सुन्दरता कहीं भी समा नहीं पा रही है और बाहर छलकती हुई नज़र आ रही है। सर्वत्र फागुन का सौंदर्य व्याप्त है और यह कवि को लुभा रही है और अपनी ओर आकर्षित कर रही है।

18. अट नहीं रही है' कविता में कवि क्या संदेश देना चाहता है?

19. 'उत्साह' कविता में कवि बादल से क्या अनुरोध करता है? [CBSE 2019]

उत्तर : 'उत्साह' कविता में कवि बादलों से अनुरोध करता है कि वे सारे आकाश को घेरकर जोर से गरजे और बरसे। धरती पर रहने वाले लोग गरमी के कारण अत्यधिक व्याकुल हैं। कवि चाहते हैं कि बादल अपने जल को बरसाकर धरती की तपन को शांत करें और पीड़ित, प्यासे लोगों को शीतलता का अहसास कराएँ।

20. 'घेर घेर घोर गगन' तथा 'काले घुँघराले' शब्द चित्र को 'उत्साह' कविता के आधार पर अपने शब्दों में स्पष्ट कर समझाइए। [CBSE 2016, 14]

उत्तर : 'उत्साह' कविता में कवि ने कहा है कि काले-काले घुँघराले बादल सारे आकाश को घेर लें और जोर से गर्जना करके बरसें। अर्थात् बादल जो काले-काले हैं और घुँघराले हैं वे हवा के साथ गर्जना करते हुए चारों ओर से घिर आते हैं।

21. 'अट नहीं रही है' कविता के आधार पर वसंत ऋतु की शोभा का वर्णन कीजिए। [CBSE 2019]

उत्तर : वसंत ऋतु की शोभा प्रकृति में इस प्रकार फैली हुई है कि वह प्रकृति में समा नहीं पा रही है। इस ऋतु में सम्पूर्ण प्रकृति हरियाली की चादर ओढ़ लेती है और अपनी सुषमा को सब ओर बिखेर देती है। सारा वातावरण पुष्पित और पल्लवित हो जाता है। सृष्टि का प्रत्येक कण उत्साह और उमंग से भरा हुआ होता है और इसका सीधा प्रभाव मनुष्य पर भी पड़ता है। वह भी प्रफुल्लित हो जाता है।

22. कवि ने बादल के कौन-कौन से विविध रूप बताए हैं?

23. कवि की आँखें फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही हैं?

उत्तर : फागुन मास की शोभा अतुलनीय है और अत्यंत खुशी प्रदान कर रही है। चारों और रंग-बिरंगे फूल खिले हैं और उनकी सुगंध चारों ओर वातावरण में फैली है। आम के पेड़ों पर बौर आ गई हैं और कोयल भी मदमस्त होकर कूकने लगी है। प्रकृति अपने अनंत रूप में शोभायमान हो रही है। अत: कवि की आँखें फागुन की सुंदरता से नहीं हट रही हैं।

24. 'उत्साह' कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर : कवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' द्वारा विरचित उत्साह कविता एक आह्वान गीत है। कविता में कवि ने बादल को गरमी से पीड़ित लोगों की आकांक्षाएँ पूर्ण कर शांति देने वाले के रूप में देखा है। बादल का दूसरा रूप नई कल्पना, नवांकुर और क्रांति की चेतना उत्पन्न करना है। इस कविता में कवि ने जीवन को समग्र रूप में देखा है जो गर्जन के रूप में क्रांति और वर्षा के रूप में नवोल्लास तथा खुशी का प्रतीक है।